37

धर्मनिरपेक्षता : महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन का आधार

डॉ. संजय कुमार
सहायक आचार्य – समाजशास्त्र,
राजकीय लोहिया महाविद्यालय चूरू

सारांश –

मनुष्य के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास शिक्षा के द्वारा ही सम्भव हो सकता है। मनुष्य न कोरी बुद्धि है, न स्थूल शरीर है और न केवल हृदय या आत्मा ही है। सम्पूर्ण मनुष्य के निर्माण के लिए तीनों के उचित और एक रस मेल की जरूरत होती है और यही शिक्षा की सच्ची व्यवस्था है। महात्मा गांधी ने शिक्षा के बारे में जो महत्वपूर्ण विचार अभिव्यक्त किए है वो भारतीय व्यवस्था को अत्यन्त लाभान्वित एवं गौरवान्वित करने वाले है। गर्भधारण से लेकर परिवार एवं समाज से सम्बन्धित शिक्षा के साथ–साथ गांधी ने धर्मनिरपेक्ष शिक्षा की जो व्याख्या की है वह वर्तमान में भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी तत्कालीन समय में थी। शिक्षा से अभिप्राय शरीर, मन तथा आत्मा की उत्तम क्षमताओं को उद्घाटित कर प्रकाश में लाना है। गांधी जी के द्वारा अहिंसा, सत्य, असहयोग, अस्तेय, अपरिग्रह जैसे राजनैतिक विचारों के साथ ही शिक्षा के सम्बन्ध में जो विचार प्रकट किए गए है, वह निश्चय ही सर्वकालिक एवं प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द –सर्वांगीण, धर्मनिरपेक्ष, प्रासंगिकता, अक्षर–ज्ञान, प्राथमिक, बुनियादी, स्वावलम्बी।

प्रस्तावना –

गांधी भारतीय समाज की सर्वांगीण उन्नति के लिये समर्पित रहे है। उनका कर्म व लक्ष्य में अटूट विश्वास रहा है। गांधीजी ने समाज सुधार व मानव कल्याण हेतु शिक्षा को अत्यावश्यक माना है। गांधी ने बुनियादी शिक्षा, नई तालीम एवं उच्च शिक्षा के साथ–साथ स्त्रियों की शिक्षा को अपने विचारों में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। गांधी मानव जीवन में धर्म व नैतिकता के महत्व को स्वीकार करते थे। गांधी हिन्दू धर्म और उसके सिद्धान्तों का स्रोत समझे जाने वाले शास्त्रों के कटु आलोचक थे। वे केवल बौद्ध धर्म में ही समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे के आदर्श को प्रतिध्वनित मानते है। उनका विचार था कि बौद्ध धर्म ने ही सारे भेदभावों को मिटाकर व्यक्ति की भौतिक, नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया है। गांधीजी के अनुसार धर्मनिरपेक्षता की भावना को आज की भारतीय शिक्षा प्रणाली द्वारा प्रसारित करने का प्रयास करना चाहिए। धर्मनिरपेक्ष समाज में धर्म का कोई स्थान नहीं होता। भारतीय समाज की दृष्टि से इसका अर्थ है– सर्वधर्मसद्भाव।

भारत एक धर्मनिरपेक्ष, प्रजातन्त्रात्मक राज्य है, जिसका अर्थ है कि राज्य की दृष्टि में सभी धर्म समान होंगे तथा किसी भी धर्म विशेष को राज्य प्रश्रय नहीं देगा। भारत जैसे देश में सभी धर्मों के लोग निवास करते है यथा– हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि। फिर भी भारत का कोई एक राजधर्म नहीं है बल्कि राज्य की दृष्टि से सभी धर्म समान महत्व के है। किसी भी धर्म को विशिष्ट स्थान नहीं दिया गया है। शिक्षा भी धर्म आधारित नहीं हो सकती है। गांधीजी के इन्हीं विचारों को शोध–पत्र के माध्यम से पुनः स्मरण का प्रयास है, जिसकी आज अत्यधिक आवश्यकता है।

प्राचीन भारत में आश्रमों, मुस्लिमकाल के मकतबों और मदरसों एवं हिन्दुओं की पाठशालाओं में नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग थी किन्तु अंग्रेजों ने नैतिक शिक्षा को शिक्षालयों से पृथक् रखा। उन्होंने राज्य द्वारा संचालित विद्यालयों में इस शिक्षा का पूर्ण निषेध किया। स्वतंत्र भारत ने भी उसी नीति को अपनाया किन्तु बाद में शिक्षा सम्बन्धी विभिन्न समितियों व राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६ में नैतिक शिक्षा को शिक्षा में स्थान दिया। गांधीजी के विचारों में धर्मनिरपेक्षता उनके राष्ट्रवाद के विचार के साथ निकट का सम्बन्ध दर्शाती है। उन्होंने हिन्दू महासभा जैसे प्रतिक्रियावादी

पहुंचाने का उद्देश्य मेरा एक छोटा सा प्रयास है। वर्तमान में धर्मनिरपेक्षता की धारणा, प्रत्येक राज्य के विकास का महत्वपूर्ण आधार होनी चाहिए। धर्मनिरपेक्ष राज्य में धर्मनिरपेक्ष शिक्षा आज की महती आवश्यकता बन गयी है जिसे पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा मानकर इसे शिक्षा–व्यवस्था के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति के मन की गहराइयों तक पहुंचाना अत्यावश्यक है। इसी उद्देश्य को लेकर चलने वाली शिक्षा–व्यवस्था गांधी की अवधारणा 'सर्वधर्मसद्भाव' को साकार कर पाने में समर्थ हो पाएगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. गांधी मोहनदास करमचन्द — मेरे सपनों का भारत

२. मिश्रा डॉ. एम. के — गांधी और शिक्षा

३. जैन डॉ. पुखराज — प्रतिनिधि पाश्चात्य राजनीतिक विचारक

४. इन्दू कृष्ण कुमार — गांधी दर्शन नयी सदी के बदलते सन्दर्भ

५. हरदान हर्ष — गांधी विचार और दृष्टि

६. जैन एम. एन. — पॉलिटिक्स, पॉवर एवं पार्टीज

❑❑❑